हर व्यक्ति के जीवन मे,,
एक कमी जरूर रह जाती है
ताकी वह यह समझ सके कि
दुनिया इंसान नही भगवान
चलाता
है,,,

"सच्ची खोज अच्छी खबर"

ज्ञान सरोवर

R.N.I.Reg.No.MAHHIN/2009/27377 (हिन्दी साप्ताहिक) डाक पंजीकरण संख्या- MH/MR/North East/237/2012-14

वर्ष : 16 अंक : 38 (प्रत्येक गुरूवार) मुम्बई, 03 अक्टूबर से 09 अक्टूबर, 2024 पृठ : 8 मूल्य : 2.00 रूपये

गोलियों का जवाब गोलों से दिया तो उनके होश ठिकाने आ गए, पीएम मोदी ने साधा पाकिस्तान पर निशाना

नई दिल्ली। जम्मू कश्मीर में जारी विधानसभा चुनाव को लेकर प्रधानमंत्री ने एक बड़ी चुनावी रैली को संबोधित किया। जिसमें उन्होंने राज्य की सभी बड़ी पार्टियों

नेशनल कांफ्रेंस, कांग्रेस और पीडीपी पर जमकर हमला बोला। इसके साथ ही अपने भाषण में पीएम मोदी ने पाकिस्तान का जिक्र करते हुए उसे आड़े हाथों लिया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि राज्य की जनता कांग्रेस, नेशनल कांफ्रेंस और पीडीपी के शासन से त्रस्त हो चुकी हैं और लोग एक बार फिर से वही पुराना निजाम नहीं चाहते हैं, जिसमें लोगों के साथ भेदभाव हो और भ्रष्टाचार को बढ़ावा मिले। उन्होंने बताया कि अब राज्य के लोग आतंकवाद, अलगाववाद और खून खराबे वाली राजनीति से दूर हो चुके हैं और अब लोग अमन और शांति की कामना करते हैं। इसीलिए अपने बेहतर भविष्य के लिए जम्मू कश्मीर की जनता भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनाने का मन बना चुकी है। रैली में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने दावा किया कि पिछले दो चरणों में हुई जबरदस्त वोटिंग से माहौल बीजेपी के पक्ष में बन गया है। इसीलिए अब राज्य में बीजेपी की पूर्ण बहुमत की सरकार बनना तय है। उन्होंने मंदिरों के नगर जम्मू क्षेत्र के लोगों से सजग रहने की अपील करते हुए कहा कि यह उनकी पसंद की सरकार होगी। पीएम मोदी के मुताबिक, पिछले कई वर्षों से जम्मू के लोगों के साथ हो रहे भेदभाव को भाजपा समझती है और सरकार बनने के बाद उनकी सभी समस्याओं का प्रमुखता से निराकरण भी किया जाएगा। आने वाले नवरात्रि और विजयदशमी को प्रधानमंत्री मोदी ने जम्मू के लोगों के लिए शुभ समय बताते हुए कहा कि इस समय पूरे राज्य में श्जम्मू की यही पुकार, अबकी बार आ रही है भाजपा सरकारश का नारा गूंज रहा है। विपक्ष पर हमला बोलते हुए नरेंद्र मोदी ने कहा कि पिछली सरकारों ने सिर्फ अपने परिवारों पर ही ध्यान दिया है और राज्य की जनता को उनके हाल पर छोड़ दिया। इसीलिए अबकी बार जम्मू की जनता अपने वोट की बदौलत उन्हें करारा जवाब देगी और इतिहास रचेगी। उन्होंने कांग्रेस को घेरते हुए आरोप लगाया कि आजादी के बाद से ही कांग्रेस ने राज्य के लोगों को सिर्फ और सिर्फ तबाही ही दी है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पिछले 10 साल में हुई शांति बहाली पर कहा कि पिछली सरकार में पाकिस्तान भारत पर गोलियां चलाता था, लेकिन सरकार चुपचाप देखती रहती थी। जिसके बाद 2014 के बाद बीजेपी की सरकार ने दुश्मन देश को गोली का जवाब गोली से देने का काम किया है। उन्होंने याद दिलाया कि आज से ठीक 8 साल पहले सरकार ने आतंकवाद के खिलाफ मोर्चा खोलते हुए सर्जिकल स्ट्राइक भी किया था। उस समय भारत ने दुनिया को बता दिया था कि यह नया भारत है और घर में घुसकर मारने की ताकत भी रखता है। आतंक को लेकर सख्त लहजे में मोदी ने कहा कि भारत की तरफ आंख उठाकर देखने वाले हर आतंकवादी को पाताल से भी ढूंढकर मार दिया जाएगा। कांग्रेस को देश विरोधी बताते हुए पीएम मोदी ने कहा कि कांग्रेस आज के समय में भी सर्जिकल स्ट्राइक के सबूत मांगकर पाकिस्तान की भाषा बोलता है। उन्होंने आरोप लगाया कि कांग्रेस कभी भी देश की सेवा करने वाले जवानों का सम्मान नहीं करती है और उसने देश की सेवा करने वाले जवानों को वन रैंक वन पेंशन के लिए लंबे समय तक तरसाया था, लेकिन भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने खजाने की चिंता ना करते हुए फौजी परिवारों को सहयोग देते हुए वन रैंक वन पेंशन को लागू करने का काम किया है। मोदी ने दावा किया कि वर्तमान समय में कांग्रेस पूरी तरह से अर्बन नक्सलियों के कब्जे में आ चुकी है। इसके अलावा, उन्होंने कांग्रेस, नेशनल कांफ्रेंस और पीडीपी को संविधान का दुश्मन बताते हुए कहा कि उनके शासन काल में लोगों को जम्मू कश्मीर में वोट देने का भी अधिकार नहीं था। इसके विपरीत भाजपा ने जम्मू कश्मीर समेत पीओके और दूसरे अन्य क्षेत्रों से आए पीड़ित लोगों को लोकतंत्र में अपने भागीदारी सुनिश्चित करने का मौका दिया है। इसीलिए जम्मू कश्मीर के लोग कांग्रेस के इस पाप को कभी नहीं भूलेगें। हमले जारी रखते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने बताया कि इन पार्टियों ने राज्य में होने वाले पंचायत चुनाव को भी रोक रखा था। साथ ही उन्होंने आरक्षण की व्यवस्था को भी राज्य में लागू करने से हमेशा रोका है और बीजेपी की सरकार ने लोगों को संविधान के मुताबिक यह सभी हक प्रदान किए हैं और इसीलिए समाज के यह सभी वर्ग बढ़–चढ़कर इस चुनाव में भारतीय जनता पार्टी के पक्ष में मतदान भी कर रहे हैं। नरेंद्र मोदी ने बताया कि इन सभी सरकारों द्वारा दिए गए जख्मों पर भारतीय जनता पार्टी मरहम लगाने का काम करेगी। कश्मीर से निर्वासित लोगों का मुद्दा उठाते हुए पीएम मोदी ने कहा कि वर्तमान सरकार में कश्मीरी पंडितों के लिए कई योजनाएं चलाई जा रही हैं। और उन्हें मिलने वाली आर्थिक सहायता में भी वृद्धि की गई है। जिसके कारण विपक्ष की सभी पार्टियों भड़की हुई है, क्योंकि उन्हें लोगों का विकास पसंद नहीं आ रहा है। उन्होंने बताया कि विपक्ष की सभी पार्टियां महान डोगरा समाज के राजा हरि सिंह को बदनाम करने के लिए उनके खिलाफ षड्यंत्र रचते हैं और भारतीय जनता पार्टी जम्मू–कश्मीर के लोगों के साथ हुए अन्याय को दूर करने के लिए प्रतिबद्ध है।

हरियाणा में हमारी सरकार बनी तो जलेबी की फैक्ट्री लगाएंगे- राहुल गांधी

मैंने हरियाणा की जलेबी खाई। यह बहुत स्वादिष्ट थी। इस जलेबी को दुनिया भर में निर्यात किया जाना चाहिए।

स्थानीय दुकानें फैक्ट्रियों में बदल सकती हैं। लेकिन, मोदी आपको ऋण नहीं देंगे क्योंकि उन्होंने सारा ऋण अडानी अंबानी को बांट दिया है। ये लोकसभा में नेता विपक्ष है और इसे प्रधानमंत्री बनना है।

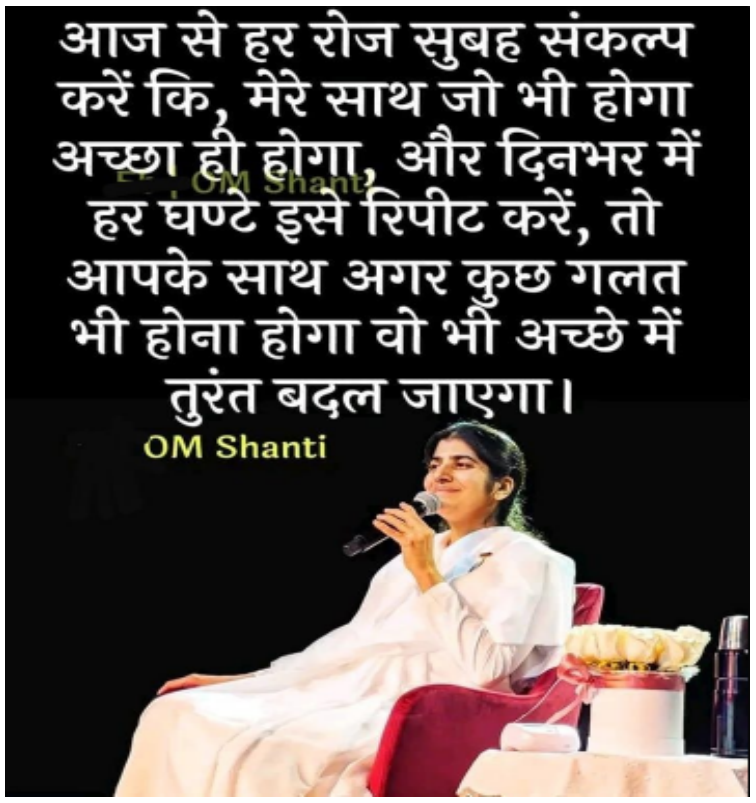

कविता

हुआ है इश्क

हुआ है इश्क लेकिन ये जताया भी नहीं जाता
ककहरा प्यार का हरदम पढ़ाया भी नहीं जाता
भले ही दर्द हो गहरा जुबां पर उफ नहीं फिर भी

कि दिल का दर्द है सबको बताया भी नहीं जाता
खज़ाना मैंने यादों का रखा है मन के कमरे में
संभालें प्यार से इसको लुटाया भी नहीं जाता
उजड़ जाते हैं जब ख्वाबों के मंजर दिल के शीशे से
करो कोशिश मगर फिर से बसाया भी नहीं जाता
'कनक' दिल है नहीं इक फाख्ता इतना समझ लो तुम
कि झूठे जाल में दिल को फंसाया भी नहीं जाता

- डॉ. कनक लता तिवारी

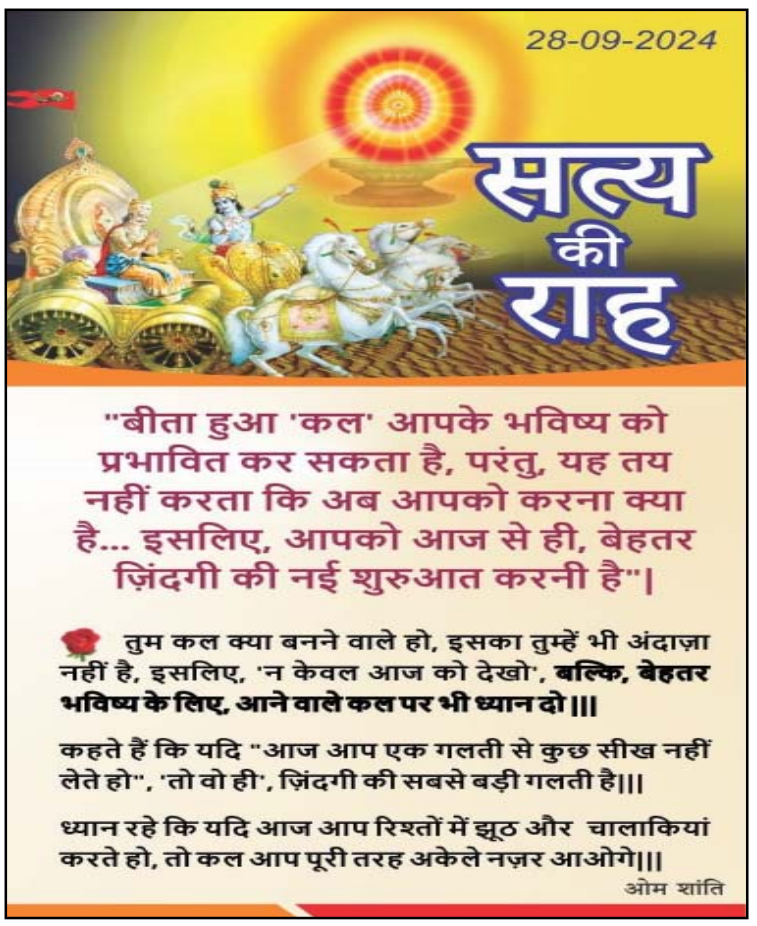

आइए शोभा बढ़ाइए

कुछ मेरी सुनिए।
कुछ अपनी सुनाइए।
दुख सुख को बाजू में रख
कुछ नया फरमाइए।
गुनगनाइए
या
विचारों में
डूब जाइए।
चाहे जो कीजिए
मोती निकालिए
और रख दीजिए
हमारे हाथ पर।
जिससे मिट जाय
अंधेरा
हमारे अज्ञान का
और आ जाय प्रकाश
पूरे ज्ञान का।
हममें
हमारे भीतर
हमारे समाज में
हमारे देश में
और इस दुनिया में
एक साथ।
चमक उठे मानवता
उछलने लगे
नैतिकता
और गाने लगे भव्यता
दिग्दिगंत में
खुशहाल होकर।।

अन्वेषी

कुर्बानी में लाखो पशुओं की हत्या कर दी जाए तो विश्वास और
श्राद्धपक्ष में लाखों पशु पक्षियों को भोजन कराया जाए तो अंधविश्वास

हरे कृष्ण

नफरत की हवा फेंकने वाले
पंखे मत इजाद करो
मानव जन्म पाया है
मानव जन्म मत बर्बाद करो

दयाराम दर्द फिरोजाबादी

खुशियों मे वो लोग शामिल होते हैं जिन्हें आप चाहते हैं और दुःख में वो लोग शामिल होते हैं जो आपको चाहते हैं,!!

आपका दिन शुभ हो।

आज सिरोही के आबूरोड पहुंचेंगी, कल सुबह 9.30 बजे ग्लोबल समिट का उद्घाटन

द्रौपदी मुर्मू, ब्रह्माकुमारीज़ के संस्थान परिसर में दो बार आने वालीं पहली महिला राष्ट्रपति

निधिउमट | माउंटआबू

सिरोही जिले में स्थित ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान मुख्यालय पर 3 अक्टूबर को राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू पहुंचेंगी। वे राष्ट्रपति पद पर रहते हुए दूसरी बार यहां आने वाली पहली राष्ट्रपति बनने जा रही हैं। आप लंबे समय से ब्रह्माकुमारीज़ की शिक्षाओं और यहां सिखाए जाने वाले राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास करती आ रही हैं। महामहिम मुर्मू आज भी राष्ट्रपति भवन में अलसुबह ब्रह्ममुहूर्त में 3.30 बजे उठ जाती हैं। एक घंटे ध्यान करती हैं। इस का ज़िक्र अपने भाषण में करती रही हैं। उनका ब्रह्माकुमारीज़ से वर्षों से गहरा लगाव है। यही कारण है कि वह मुख्यालय शांतिवन में दूसरी बार पहुंच रही हैं। 4 अक्टूबर को सुबह 9.30 बजे ग्लोबल समिट का उद्घाटन करेंगी। इसके बाद दोपहर में विशेष विमान से रवाना हो जाएंगी।

हम स्वचिंतन और परमात्म चिंतन करते हैं

अलसुबह 3.30 बजे से शुरू हो जाती है दिनचर्या ब्रह्माकुमारी संस्थान के कार्यकारी सचिव डॉ. मृत्युंजय भाई बताते हैं कि राष्ट्रपति मुर्मू की दिनचर्या आज भी अलसुबह 3.30 बजे से हो जाती है। सबसे पहले वह ज्योति बिंदु स्वरूप परमात्मा का ध्यान करती हैं। राजयोग मेडिटेशन ध्यान की वह अवस्था है, जिसमें हम खुद को आत्मा समझकर परमपिता को याद करते हैं। परमात्मा के जो गुण और शक्तियां हैं, उनका मन ही मन बुद्धि द्वारा विजुअलाइज करने खुद को उनके स्वरूप में स्थित होने का अभ्यास किया जाता है। राजयोग अंतर्गत की यात्रा है, जिसमें हम स्वचिंतन और परमात्म चिंतन करते हैं। इसके अलावा वह शाम 6.30 बजे से 7.30 बजे तक भी यथासंभव समय होने पर राजयोग मेडिटेशन करती हैं।

अब तक 4 राष्ट्रपति आ चुके संस्थान, पांचवीं मुर्मू

ब्रह्माकुमारी संस्थान के जनसंपर्क अधिकारी बीके कोमल ने बताया कि इससे पूर्व 1984 में राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह, 1987 में आर. वेंकटरमण व 2006 में एपीजे अब्दुल कलाम और 2019 में तत्कालीन राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने महिला सशक्तीकरण से सामाजिक परिवर्तन विषय पर आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन को संबोधित किया था। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू 3 जनवरी 2023 को शांतिवन पहुंची थीं, उन्होंने आजादी के अमृत महोत्सव के तहत आयोजित आध्यात्मिकता से स्वर्णिम भारत का उदय कार्यक्रम में भाग लिया था।

अब तक ब्रह्माकुमारीज़ आए राष्ट्रपति

1984: तत्कालीन राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह ने राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया था।

1987: तत्कालीन राष्ट्रपति आर. वेंकटरमण ने शिरकत की थी।

2006: तत्कालीन राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम संस्थान के मुख्यालय पहुंचे थे।

2019: तत्कालीन राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने महिला सशक्तिकरण से सामाजिक परिवर्तन सम्मेलन को संबोधित किया था।

जौनपुर की बेटी वत्सला पांडे की अंतरराष्ट्रीय उड़ान

महानगर संवाददाता

जौनपुर

कैंब्रिज से करेंगी एलएलएम

जौनपुर के एक छोटे से गांव कठवतियां से निकलकर वत्सला पांडे ने अपनी मेहनत और लगन से वह मुकाम हासिल किया है, जो देश की बेटियों के लिए प्रेरणा बन सकता है। वत्सला अब विश्व प्रसिद्ध कैंब्रिज विश्वविद्यालय से एलएलएम (मास्टर ऑफ लॉ) और एमएसएल (कॉरपोरेट कानून में मास्टर) की डिग्री हासिल करेंगी। वत्सला को इस उल्लेखनीय सफर के लिए 23.5 लाख रुपये की स्कॉलरशिप मिली है, जो उनकी प्रतिभा और कड़ी मेहनत का प्रमाण है। डॉ. रमाशंकर पाण्डेय की पौत्री वत्सला की प्रारंभिक शिक्षा

वाराणसी के गुरु नानक इंग्लिश स्कूल से हुई, जहां उन्होंने 12वीं तक का सफर तय किया। आगे की पढ़ाई के लिए उन्होंने सिम्बायोसिस लॉ स्कूल, हैदराबाद से कानून की पढ़ाई की और फिर एडीआर सोसाइटी की स्थापना की, जिसका उद्देश्य कानूनी विवादों का वैकल्पिक समाधान निकालना है। वत्सला ने दिल्ली उच्च न्यायालय और कई प्रमुख वाणिज्यिक अदालतों में अपनी कानूनी सेवाएं दीं, जहां उन्होंने दीवानी, दिवाला, वाणिज्यिक और प्रतिस्पर्धा कानून जैसे जटिल मामलों में विशेषज्ञता हासिल की। इसके बाद उन्हें सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश जस्टिस जितेंद्र कुमार माहेश्वरी के साथ काम करने का भी अवसर मिला, जो उनके करियर में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित हुआ।

जौनपुर साधक परिवार द्वारा प्रत्येक रविवार को इसी प्रकार से प्रभात फेरी एवं भगवन्नाम संकीर्तन यात्रा निकाली जाती है। प्रभात फेरी की बड़ी भारी महिमा है, इसमे भगवन्नाम जप, शंखनाद तथा संकीर्तन करने से वातावरण पवित्र एवं भक्तिमय हो जाता है। वैज्ञानिक एवं स्वास्थ्य की दृष्टि से भी यह अत्यंत लाभदायक है, सुबह–सुबह शांत और प्रदूषण रहित वातावरण में पैदल चलने से शरीर स्वस्थ और मन प्रसन्न रहता है। अतः ऐसी प्रभात फेरियां अन्य स्थानों पर भी निकालनी चाहिए।

2 अक्टूबर .....

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी एवं सौम्य, सादगी, साहसी व सफलतम प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री जी की जयंती पर शुभकामनाएं....

-संजय वर्मा, पत्रकार - सामाजिक विज्ञान, विज्ञान व खेलकूद एवं पूर्व उपाध्यक्ष/मंत्री/ जनसंपर्क अधिकारी/मीडिया प्रभारी - श्री चित्रगुप्त मंदिर सभा(गोरखपुर)....

ओज-के-रोज सनातन आश्विन शुक्ला प्रतिपदा

नवरात्रि (माँ शैलपुत्री पूजा), अग्रसेन जयंती, घटस्थापना गुरुवार, ०३ अक्टूबर २०२४ विक्रम संवत् २०८१

श्रीकृष्ण –स्तवन दुर्मिल सवैया छंद
गणावली –सगण ८

मनमोहन मोह हरो मन का,
वचनामृत का नित पान करूँ।
मन इंदु समान सुशीतल हो,
चरणोदक ले तव ध्यान करूँ।
मति बुद्धि विवेक सुधा सम हो,
शुचि भाव लिए गुणगान करूँ।
मन शांत सरोवर भाँति रहे,
ममतारत हो श्रमदान करूँ।।

राहुल सिंह ओज

ग़ज़ल

शमा होती नहीं रौशन तो परवाने कहाँ जाते
नज़र से ही हुए मदमस्त मैख़ाने कहाँ जाते

तिरा ये चाँद सा मुखड़ा कि पेशानी को छूती लट
अरे ज़ालिम घटा काली को लहराने कहाँ जाते

बनेगी ये कहानी हीर रांझा की मुहब्बत सी
अगर ना आशिकी होती तो अफ़साने कहाँ जाते

इबादत इक तरह का इश्क़ ही तो उस खुदा से है
अगर चाहत नहीं होती तो बुत खाने कहाँ जाते

मुहब्बत की बड़ी नेमत मिली है ऐ श्कनकश सबको
जहाँ में इश्क़ ना होता ये दीवाने कहाँ जाते

–डॉ कनक लता तिवारी

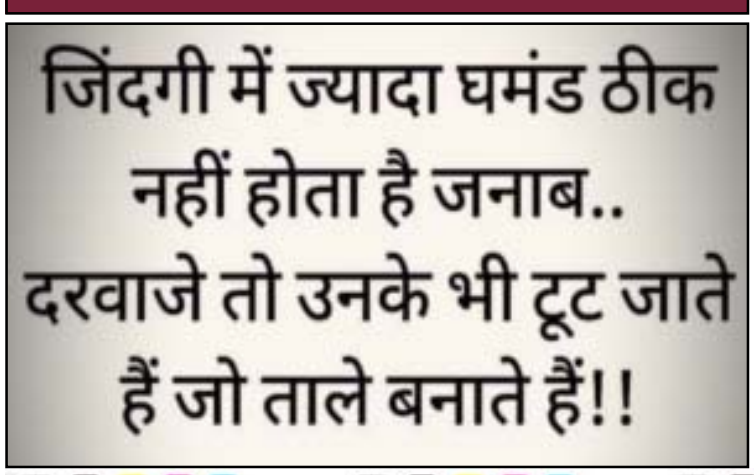

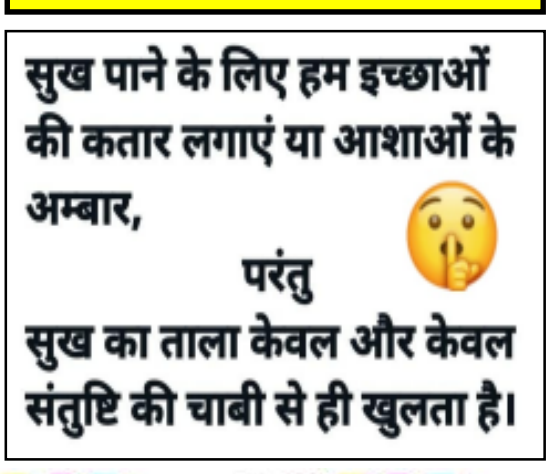

सम्पादकीय...

सीबीआई और एफबीआई सिर्फ दिखाने के लिए स्वतंत्र्य

आज देश की प्रमुख जांच एजेंसियाँ केंद्रीय जांच ब्यूरों (सीबीआई) और वित्तीय जांच ब्यूरो (एफबीआई) सहित रक्षा इकाईयों पर यह एक सामान्य आरोप लगाा जा रहा है, ये सिर्फ दिखाने के लिए स्वतंत्र्य है, जबकि इन पर पूरा नियंत्रण सरकार का है, इसीलिए यह सामान्य आरोप लगाया जाता है कि सरकारी वित्तीय घपलों की जांच निष्पक्षता के दायरें से बाहर ही रहती है, अब आज का मुख्य सवाल यह है कि इन प्रतिष्ठानों के नाम को स्वतंत्र्य के साथ जोड़ा गया है, तो इन्हें स्वतंत्रताय व न्यायपूर्ण काम क्यों नही करने दिया जाता। पिछले दिनों दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री अरिवंद केजरीवाल की शराब काण्ड में जमानत पर सर्वोच्च न्यायालय ने जो सरकारी जांच एजेंसियों को लेकर सख्त टिप्पणियां की, उन पर सरकार ने चाहे गौर न किया हो, किंतु देश के हर जागरूक और बुद्धिजीवी नागरिक ने काफी गंभीरता से लेकर उस पर मनन भी किया है और सर्वोच्च न्यायालय की टिप्पणियों को आज की सच्चाई से जोड़ा है। आज की एक बड़ी सच्चाई यह भी है कि आज देश को प्रजातंत्र के तीन अंगों में से सिर्फ और सिर्फ न्यायपालिका पर ही भरोसा शेष रहा है, विधायिका व कार्यपालिका के साथ ही चौथे कथित अंग खबर पालिका पर भी भरोसा शेष नही रहा। अब चूंकि पूरे देश को न्याय पालिका पर ही भरोसा रहा है और न्याय पालिका भी इस भरोसे को कायम रखने में जुटी है, तो फिर इन तथाकथित जांच एजेंसियों को सरकारी नियंत्रण से बाहर क्यों नही लाया जा रहा? यहाँ यह भी कटु सत्य है कि सरकार के अधिकांश दुष्कर्मच के मामलों की जांच का उत्तरदायित्व भी इन्हीं जांच एजेंसियों को सौंपा जाता है, जिन पर केन्द्र या राज्य में विराजित उन राजनेताओं का नियंत्रण रहता है जो स्वयं इन दुष्कर्मोंच के सहभागी होते है, अब ऐसी स्थिति में तथाकथित इन स्वतंत्र जांच एजेंसियों से सही न्यायपूर्ण व संवैधानिक जांच की उम्मीद कैसे की जा सकती है, यही मुख्य कारण है कि प्रजातंत्र के किसी भी अंग को सही व उचित न्याय नही मिल पाता और देश के आम नागरिक की खून–पसीनें की कमाई का अधिकांश पैसा इन कथित भ्रष्ट सत्ताधीशों की जेबों में चला जाता है, यही मुख्य कारण है कि आज के युवा वर्ग में राजनीति के प्रति रूझान बढ़ता जा रहा है। ज़और देश को सकी गाढ़ी कमाई राशि के घपले पर न्याय भी नही मिल पाता क्योंकि जांच एजेंसियाँ इन्हीं भ्रष्टाचारियों के कब्जे में रहती है और यही कारण है कि भ्रष्टाचार का महारोगच दिन दूनी–रात चौगुनी गति से महामारी का रूप ग्रहण करता जा रहा है। इसलिए आज की सबसे अहम् और पहली जरूरत इन सरकारी जांच एजेंसियों को सरकार के नियंत्रण से बाहर करने की है और इसके लिए तथाकथित रूप से ईमानदार प्रधानमंत्री जी को ही संसद में संविधान संशोधन प्रस्तुत कर इन स्वतंत्र्य एजेंसियों पर से अपना नियंत्रण हटाना पड़ेगा। खासकर केंन्द्रीय गृहमंत्री से तो ऐसी अपेक्षा की ही जा सकती है? क्योंकि आज इन एजेंसियों की स्वायतता को लेकर हर तरफ से कई सवाल खड़े किए जा रहे है। क्या ही अच्छा हो, यदि मोदी सरकार इन स्वतंत्र जांच एजेंसियों की अब तक की भूमिकाओं, उनकी कार्यशैली व उनकी मजबूरियों की निष्पक्ष समीक्षा कर संसद के माध्यम से इन्हें और अधिक सक्षम व विश्वसनीय बनाने की दिशा में अहम् भूमिका का निर्वहन करें?

दूर के ढोल सुहावन लागे

जब हम मुम्बई महानगर में थे तो सुनते थे कि यूपी में ये हो गया, यूपी में वो हो गया। यूपी में ये योजना चल रही है।यूपी में वो योजना चल रही है।यूपी में सड़कें चकाचक गड्ढामुक्त हो गई हैं।यूपी माफिया मुक्त हो गई।यूपी में अपराधी गायब हो गये।यूपी में महिलायें सुरक्षित हैं।कानून व्यवस्था चौकस है।

लेकिन विगत दस दिन से गाँव आया हूँ,उपरोक्त सभी बातें उस कहावत को साबित कर रही हैं,ष्दूर के ढोल सुहावनेष्।जब से आया हूँ विजली इतनी आँख मिचौली कर रही है कि 2012 जैसी स्थिति प्रत्यक्ष बनी हुई है।प्रति दिन विजली असमय कट जा रही है।जब जरूरत होती है तब विजली नदारद रहती है।न भोजन बनाने के समय रहती है,न भोजन करने के समय रहती है,न दोपहर में आराम करने के समय रहती है,न रात में सोने के समय रहती है।इस विजली का लोग क्या करें जो असमय आ जा रही है।यह विजली अनुपयोगी है।

इसी तरह सड़को की हाल है।हमारे मछलीशहर से बदलापुर की तरफ जाने वाली सड़क की हालत ऐसी है कि सड़क में गड्ढा है कि गड्ढा में सड़क।आदमी संसय में है।ए तो एक सड़क का हाल है।ऐसे ही अन्य सड़कों के हालात हैं।सरकारी पैसों का इतना दुरुपयोग तो हमने कहीं नहीं देखा,जितना यूपी में हो रहा है।गऊशालायें बनी हुई हैं,मगर गायें नदारद हैं।कचरा घर गऊशाला से मजबूत बना है।मगर उसमें एक भी कचरा नहीं है।जैसा कचराघर होना चाहिए,वैसा गऊशाला बना हुआ है।जैसा गऊशाला बनना चाहिए,वैसा कचरा घर बना हुआ है।देखकर उन इंजिनियरों और सरकारी कर्मचारियों की करतूतों पर हँसी आती है।उनकी बनाई हुई योजनाओं पर और सरकार की नीतियों पर हँसी आती है।और दुख होता है यह देखकर कि जनता का पैसा इस तरह से दुरुपयोग किया जा रहा है।एक तरफ जनता मंहगाई से तो वैसे ही त्रस्त है।ऊपर से इस तरह दुरुपयोग,समझ से परे है।

बहुत से गाँव में सरकारी हास्पिटल बनी हुई है।उसमें न डाक्टर आते हैं,न विल्डिंग की सुरक्षा ही हो रही है।न वहाँ दवा है।न डाक्टर।यह हम गरीबों के साथ छल है।दिखावे में हमारे पैसे की बरवादी सरकारें जानबूझकर कर रही हैं।जब सरकार डाक्टर की व्यवस्था नहीं कर पा रही है।बिल्डिंग के रखरखाव की व्यवस्था नहीं कर पा रही है तो हमारे पैसे की बरवादी न करे।बनी है हास्पिटल,उसमें नशेड़ी लोग अपना अड्डा बना लिए है।या तो कुछ लोग मवेशी बाँध रहे हैं।ऐसे ही कई सरकारी चीजें देखने को मिली हैं,जिसमें धन का केवल अपव्यय हुआ है।उसका कोई मतलब नहीं दिखा।यदि कार्य पूरा नहीं करना है तो,शुरू ही न किया जाय।क्योंकि अधूरे कार्य से पैसे की बरवादी होती है,और जनता के ऊपर मंहगाई के तौर पर भार पड़ता है।जिस सुविधा के लिए जनता का पैसा फेंका गया,न वो सुविधा मिली,ऊपर से मंहगाई उपहार में मिली।ए दोहरी मार जनता को न रोने दे रही है न हँसने।

इसलिए सरकार से आग्रह है कि जनता को बेवकूफ बनाना छोड़े।जो भी करे उसे निष्ठापूर्वक हर हाल में पूरा कर जनता को समर्पित करे।जबतक कोई भी योजना सुदृढ़ न बने।उसपर काम ही न करे।जैसे हमारे यहाँ कचराघर और गऊशाला दोनों आस पास ही बना है।कचराघर की बाऊण्ड्री लगभग 3 एकढ़ के क्षेत्रफल में है।और गऊशाला में लगभग दस गाय ही रखी जा सकती हैं।गऊशाला में कोई भी दिवाल नहीं है।न चारा रखने की व्यवस्था है।न गऊ का रखरखाव करने वालों की व्यवस्था है।दोनो ही अनुपयोगी है।जो जगह गऊशाला के लिए होनी चाहिए थी उसे कचराघर बना दिया गया है।जबकी गाँव में कचराघर अनुपयोगी है।उस जगह पर गऊशाला उपयोगी थी।जिसमें गाय की रखवाली करने वालों को रहने की व्यवस्था,चारा रखने की व्यवस्था,उनके मल को रखने की व्यवस्था और उनकी बिमारी दूर करने वाले डाक्टर की व्यवस्था बन सकती है।लेकिन पता नहीं किस दिमाग से काम किया गया है,समझ से परे है।इन क्रियाकलापों को देखकर बस एक ही बात समझ में आई कि ष्दूर के ढोल सुहावन लागे।

पं.जमदग्निपुरी

सकारात्मक खबरों को बढ़ावा देने से ही समाज स्वस्थ और सुखी होगाः केंद्रीय मंत्री डा. मुरुगन

राष्ट्रीय मीडिया सम्मेलन का शुभारंभ

केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण राज्यमंत्री डा. एल. मुरुगन, मुख्य प्रसाशिका दादी रतन मोहिनी, आईआईएमसी के पूर्व निदेशक प्रो. संजय द्विवेदी, पूर्व कुलपति डा. मान सिंह परमार और ब्रह्माकुमारीज के वरिष्ठ पदाधिकारियों ने किया शुभारंभ

भारत सहित नेपाल से एक हजार से अधिक पत्रकार, संपादक, ब्यूरो चीफ और मीडिया प्रोफेसर पहुंचे

आबू रोड। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के आबू रोड स्थित मुख्यालय शांतिवन के आनंद सरोवर परिसर में आयोजित राष्ट्रीय मीडिया सम्मेलन का उद्घाटन केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण राज्यमंत्री डॉ. एल. मुरुगन और मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतन मोहिनी ने किया। मीडिया विंग द्वारा स्वस्थ एवं सुखी समाज के लिए आध्यात्मिक सशक्तिकरण– मीडिया की भूमिका विषय पर आयोजित इस राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लेने के लिए देशभर से एक हजार से अधिक प्रिंट, इलेक्ट्रानिक, रेडियो और बेव जर्नलिज्म से जुड़े पत्रकार, संपादक, ब्यूरो चीफ, रेडियो जॉकी, फ्रीलांसर पत्रकार और मीडिया प्रोफेसर पहुंचे हैं।

शुभारंभ पर केंद्रीय मंत्री डॉ. मुरुगन ने कहा कि विकसित भारत के निर्माण में मीडिया का महत्वपूर्ण योगदान है। आज एक अच्छी न्यूज उतनी तेजी से वायरल नहीं होती है जितनी की एक गलत, फेंक न्यूज़ वायरल हो जाती है। पत्रकार पहले खबरों की सत्यता की जांच कर लें उसके बाद ही प्रकाशित करें। अच्छी खबरों को बढ़ावा देने से ही स्वस्थ और सुखी समाज का निर्माण होगा। आज समाज में यदि नकारात्मक माहौल बन रहा है तो हमें चिंतन करने की जरूरत है कि हम समाज में क्या भेज रहे हैं। मूल्यनिष्ठ समाज के निर्माण के लिए हमें जीवन में मूल्यों का समावेश करना होगा।

पत्रकार निजी जीवन में अध्यात्म को अपनाएं –

उन्होंने कहा कि एक पत्रकार का मौलिक अधिकार है कि वह आध्यात्मिकता से जुड़े। मीडियाकर्मी अपने निजी जीवन में अध्यात्म को अपनाएं। एक पत्रकार गलत न्यूज़ से देश का माहौल बिगाड़ सकता है इसलिए पत्रकार को अपनी जिम्मेदारी समझनी होगी। सूचना देने के लिए मीडिया सबसे शक्तिशाली साधन है, जो दुनिया को खेल और संस्कृति आदि की जानकारी देता है। यह लोकतंत्र का चौथा स्तंभ है। मीडिया हिमालय से लेकर रेगिस्तान में जाकर सूचनाएं जुटाता है।

ब्रह्माकुमारीज़ विश्व शांति के लिए कार्य कर रही है –

केंद्रीय मंत्री डॉ. मुरुगन ने कहा कि विश्व शांति के लिए ब्रह्माकुमारीज़ संस्था कार्य कर रही है। मैं पहली बार ब्रह्माकुमारीज़ के मुख्यालय आया हूं। यहां आकर बहुत अच्छा महसूस कर रहा हूं और बहुत खुशी हो रही है। मैंने दादी रतन मोहिनी से मुलाकात कर उनका आशीर्वाद लिया। यहां की दिव्यता और पवित्र माहौल बहुत सुखदायी है।

मीडिया अपने उद्देश्य से भटक गया है–

डॉ. कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता एवम जनसंचार विश्विद्यालय रायपुर के पूर्व कुलपति डॉ. मान सिंह परमार ने कहा कि जब देश आजाद नहीं हुआ था तो मीडिया के सामने एक लक्ष्य, एक ध्येय, एक उद्देश्य था। लेकिन जब देश आजाद हो गया तो मीडिया के सामने एक चुनौती थी कि अब किस दिशा में आगे बढ़ा जाए। लेकिन आज व्यापारवाद के दौर में मीडिया अपने उद्देश्य से भटक गया है। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में खबरों को बढ़ा–चढ़ाकर पेश किया जा रहा है जो किसी भी रीति से समाज के लिए ठीक नहीं है। सोशल मीडिया ने हमें आजादी जरूर दी है लेकिन ऐसा लगता है कि कहीं सोशल मीडिया भस्मासुर न बन जाए। प्रेस काउंसिल बने वर्षों हो गए लेकिन आज तक हम एक आदर्श आचार संहिता लागू नहीं कर पाए हैं।

नई दिल्ली दैनिक जागरण के एक्जीक्यूटिव एडिटर विष्णु प्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि हम राष्ट्र और राष्ट्रीयता के स्तंभ हैं। हम सत्यनिष्ठ लोग हैं। लोकतंत्र में संरक्षण की जरूरत है लेकिन यदि मीडिया को नियंत्रीकरण किया जाएगा तो वह अपना अस्तित्व खो देगा। भारत का पत्रकार आध्यात्मिक ही होगा। दिल्ली के पीआईबी के पूर्व प्रिंसिपल डीजी कुलदीप सिंह ने कहा कि कई बार हम पत्रकारों को अपने सिद्धांतों के साथ समझौता करना पड़ता है। लेकिन हमें अपने मूल्यों को कायम रखना होगा।

अश्लील सामग्री मुक्त मीडिया बनाना होगा –

आईआईएमसी के पूर्व महानिदेशक प्रो. संजय द्विवेदी ने कहा कि हम सभी पत्रकारों को अभियान चलाना चाहिए कि अश्लील सामग्री मुक्त समाज बने। हमें अश्लील कंटेंट को प्रचारित और प्रसारित करना बंद करना होगा। एक–एक व्यक्ति सूचना का राजदूत है। ब्रह्माकुमारीज़ समाज के प्रत्येक वर्ग के लिए कार्य कर रही है। ये ब्रह्माकुमार भाई–बहनें त्याग की मूर्ति हैं। दुनिया के बेहतर अखबारों को टक्कर देने वाले अखबार आज हमारे देश में निकल रहे हैं। आज मीडिया का भारतीयकरण करने की जरूरत है। आज हम जिस मीडिया की तर्ज पर कार्य कर रहें हैं, वह पाश्चात्य मीडिया की शैली है। हमारे यहां तो लोक मंगल की भावना को लेकर कार्य करने की परंपरा रही है। हमें संवाद की परंपरा की ओर फिर से बढ़ने की जरूरत है। हम जगतगुरु की बात कर रहे हैं लेकिन कोई शिष्य बनने के लिए तैयार है।

इन्होंने भी व्यक्त किए अपने विचार–

अतिरिक्त महासचिव राजयोगी बृजमोहन भाई ने कहा कि तीनों कालों की न्यूज़ परमात्मा के पास है। सबसे बड़ा सत्य है कि हम सभी एक आत्मा हैं। जब हम खुद को आत्मा मानेंगे, तभी काम विकार पर विजय पा सकेंगे।

मीडिया निदेशक राजयोगी बीके करुणा भाई ने कहा कि मीडिया विंग पत्रकारों के जीवन को खुशहाल बनाने के लिए कार्य कर रहा है। हमारा मकसद है पत्रकारों के जीवन में आध्यात्मिक समावेश से समाज को सुखी संपन्न बनाने की ओर ले जाना।

जयपुर सबजोन की निदेशिका राजयोगिनी बीके सुषमा दीदी ने कहा कि राजयोग को जीवन में शामिल करने से सारे रोग खत्म हो जाते हैं। आपने राजयोग मेडिटेशन से सभी को गहन शांति की अनुभूति कराई। शिक्षा प्रभाग की उपाध्यक्ष राजयोगिनी बीके शीलू दीदी ने कहा कि आंतरिक सशक्तिकरण से ही स्वस्थ और सुखी होगा। समाज समृद्ध शाली होगा। विंग की राष्ट्रीय संयोजिका बीके सरला आनंद बहन ने कहा कि बिना अध्यात्म के स्वस्थ समाज की परिकल्पना नही की जा सकती है। इस कार्य में मीडिया का सबसे महत्वपूर्ण योगदान है। स्वागत भाषण मीडिया विंग के राष्ट्रीय संयोजक बीके शांतानु भाई ने दिया। स्वागत नृत्य बेंगलुरु से आए सुप्रीम शिव शक्ति सांस्कृतिक अकादमी के बच्चों ने पेश किया। संचालन जयपुर की जोनल संयोजिका चंद्रकला दीदी ने किया।

प्रसिद्धी पत्रक

ओबीसी आरक्षणाला धक्का न लावता , ओबीसीच्या आरक्षणा मधून मराठा समाजाला आरक्षण देणे शक्य ; कर्पूरी ठाकूर फार्मूला वापरून सर्वोच्च न्यायालयाच्या निकालाप्रमाणे ओबीसी आरक्षणचे उपवर्गीकरण हा एकमेव पर्याय..

–– आरक्षण अभ्यासक /माजी खासदार हरिभाऊ राठोड.

राज्यातील मराठा आरक्षणाचा जटिल प्रश्न सोडविताना ,ओबीसी आरक्षणा ला धक्का लागू नये ,हा सुद्धा एक जटिल प्रश्न आहे ,मराठा समाजाला आरक्षण मिळेल आणि ओबीसी आरक्षणाला धक्काही लागणार नाही ,असा एक प्रस्ताव माजी खासदार तथा आरक्षण अभ्यासक हरीभाऊ राठोड यांनी शासनाला सादर केला आहे.

त्यांच्या प्रस्तावामध्ये शासनाने खालील प्रमाणे तातडीने कार्यवाही करावी ,आणि उपोषनकर्ते मनोज जरांगे पाटील ,लक्ष्मण हाके, घ्ड.ससाने, नवनाथ वाघमारे या सर्वाचे जीव वाचवावे आणि दोन मोठे समाजातील संघर्ष टाळावा, जेणेकरून येणाऱ्या निवडणूका निरूपक्ष आणि सामाजिक सुलोखा राखून करता येईल.

टप्पा क्रमांक १).

ओबीसींना असलेले २७ः आरक्षणाची मर्यादा ४८ः पर्यंत वाढविता येईल, कारण सर्वोच्च न्यायालयाच्या एका निकालाप्रमाणे याचिका क्रमांक २५६ /१९९४ प्रमाणे राज्यात बांटिया आयोग आणि शुक्रे आयोग यांच्या अहवाला प्रमाणे ओबीसीचा इम्प्रिकल डाटा मिळाला आहे. सर्वोच्च न्यायालयाच्या निर्देशानुसार आरक्षणाची ५० टक्क्याची मर्यादा वाढवून देता येईल.

टप्पा क्रमांक २).

संपूर्ण मराठा समाजाला कुणबी तत्सम जाहीर करून ओबीसीच्या अनुक्रमांक ८३ वर त्यांना आणता येईल.

टप्पा क्रमांक ३).

आरक्षणाचे तत्व आणि इंद्रा सहानी प्रकरणी ११ सर्वोच्च न्यायालयाच्या न्यायाधीशांनी दिलेल्या निर्देशानुसार कुणबी मराठा एक आणि तत्सम असल्यामुळे ,ओबीसीचे उपवर्गीकरण करताना त्यांना वेगळे आरक्षण दिल्यास ओबीसीच्या मूळ २७ः आरक्षणाला धक्का लागणार नाही, आणि कुणबी मराठ्यांना स्वतंत्र वेगळा आरक्षण मिळेल.

टप्पा क्रमांक ४).

वरील प्रमाणे ओबीसी आरक्षणाची टक्केवारी वाढविल्यानंतर भटके आणि धनगर प्रत्येकी ०.५ टक्का तर वंजारी आणि विमुक्त प्रत्येकी १ टक्का आरक्षण वाढवून देता येईल, तसेच बारा बलुतेदार, विश्वकर्मा या समाजाला सुद्धा ओबीसीतून वेगळा प्रवर्ग तयार करून वेगळे स्वतंत्र आरक्षण देता येईल.

वरील प्रमाणे सर्वोच्च न्यायालयाच्या निर्देशानुसार भारतरत्न कर्पूरी ठाकूर फार्मूल्यानुसार सर्वोच्च न्यायालयाच्या उपवर्गीकरण करण्याच्या निर्देशानुसार आणि राज्यामध्ये असलेल्या प्रचलित वसंतराव नाईक आणि तत्कालिन मुख्यमंत्री शरद पवार यांनी ओबीसी आरक्षणाचे उपवर्गीकरण केल्यानुसार हा जटील प्रश्न सोडवणे शक्य आहे, आणि एकमेव पर्याय आहे, अन्यथा उपोषणकर्त्यांना आणि सरकारला कुठल्याही पर्याय शिल्लक राहिलेला नाही.

आपला,

हरिभाऊ राठोड

(आरक्षण अभ्यासक तथा माजी खासदार)

पितृपक्ष (पिंडदान) के दौरान गया (बिहार) पर्यटन का एक अनुभव ....

अपने बाबा–माता–पिता –नाना एवं समस्त पितरो के पिंडदान के कारण गया (बिहार) जाने का पिछले वर्षों अवसर लगा। भारत के बिहार राज्य के गया ज़िले में स्थित एक नगर है। इस नगर का हिन्दू, बौद्ध और जैन धर्मों में गहरा ऐतिहासिक महत्व है। शहर का उल्लेख रामायण और महाभारत में मिलता है। गया तीन ओर से छोटी व पत्थरीली पहाड़ियों से घिरा है, जिनके नाम मंगला–गौरी, श्रृंग स्थान, रामशिला और ब्रह्मयोनि हैं। नगर के पूर्व में फल्गू नदी बहती है। वैदिक कीकट प्रदेश के धर्मारण्य क्षेत्र मे स्थापित नगरी है गया। वाराणसी की तरह गया की प्रसिद्धि मुख्य रूप से एक धार्मिक नगरी के रूप में है। । गया से 13 किलोमीटर की दूरी पर बोधगया स्थित है जो बौद्ध तीर्थ स्थल है और यहीं बोधि वृक्ष के नीचे भगवान बुद्ध को ज्ञान की प्राप्ति हुई थी। गया (बिहार) के महत्वपूर्ण तीर्थस्थानों में से एक है। यह शहर खासकर हिन्दू तीर्थयात्रियों के लिए काफी प्रसिद्ध है। यहां का विष्णुपद मंदिर पर्यटकों के बीच लोकप्रिय है। पुराणों के अनुसार भगवान विष्णु के पांव के निशान पर इस मंदिर का निर्माण कराया गया है। गया पितृदान के लिए भी प्रसिद्ध है। कहा जाता है कि यहां फल्गु नदी के तट पर पिंडदान करने से मृत व्यक्ति को बैकुण्ठ की प्राप्ति होती है। गया, फल्गु नदी के तट पर स्थित है। गयासुर नामक दैत्य का बध करते समय भगवान विष्णु के पद चिह्न यहां पड़े थे जो आज भी विष्णुपद मंदिर में देखे जा सकते है. मुक्ति धाम के रूप में गया न कह कर आदरपूर्वक श्गया जीश कहा जाता है। गया का उल्लेख महाकाव्य रामायण में भी मिलता है।

कोरोना के विषम परिस्थितिओ के लगभग तीन –चार वर्ष बाद गया मे भीड़ बहुत ज्यादा दिखा। होटल, धर्मशाला एवं सभी कुछ खचाखच भरा दिखा मगर प्रसाशन की सुरछा एवं सफाई व्यवस्था अच्छा था। वास्तव मे (पिछले वर्षों) पितर पछ के पिंडदान संस्कार (प्रक्रिया) से मुझे शांति लगा एवं गया देखने का मुरीद भी पूरा हुआ। ससम्मान।

–संजय वर्मा, स्वतंत्र पत्रकार

–सामाजिक विज्ञान, विज्ञान एवं खेलकूद, (गोरखपुर)...

बंगाल को लेकर डर का इजहार और उड़ीसा यौन उत्पीड़न मामले पर चुप्पी यही दोहरा चरित्रः अजय खरे

रीवा 23 सितंबर। उड़ीसा में एक सैन्य अधिकारी की मंगेतर के साथ जब रास्ते में कुछ युवकों ने दुर्व्यवहार किया तो भुवनेश्वर के भरतपुर थाने में इसकी शिकायत दर्ज करने के बजाय पीड़िता के साथ वहां यौन उत्पीड़न किया गया। यहां तक पुलिस ने अनुचित दबाव बनाने के लिए पीड़िता को ही जेल भेज दिया। आखिरकार उड़ीसा हाई कोर्ट से पीड़िता को जमानत मिल गई है। समता संपर्क अभियान नारी चेतना मंच विंध्यांचल जन आंदोलन समाजवादी कार्यकर्ता समूह की एक संयुक्त प्रेस विज्ञप्ति में कहा गया कि यह भारी विडंबना है कि डबल इंजन सरकार बनने के बाद उड़ीसा में कानून व्यवस्था बहुत बिगड़ गई है। यौन उत्पीड़न का शिकार हुई युवती के साथ थाने में भी शोषण किया गया। रक्षक भक्षक बन गए हैं। अन्याय का प्रतिकार करने पर पीड़िता को ही जेल भेज दिया जाता है। समता संपर्क अभियान के राष्ट्रीय संयोजक लोकतंत्र सेनानी अजय खरे ने कहा है कि इस मसले पर देश के उच्च पदों पर बैठे लोगों का अभी तक कोई बयान नहीं आया है। अब किसी को कोई डर नहीं लग रहा है। सब तरफ सन्नाटा है। इसके पहले बंगाल की घटना पर ममता सरकार के खिलाफ बहुत अधिक बयान बाजी हो रही थी लेकिन इधर उड़ीसा में भाजपा की डबल इंजन सरकार के कार्यकाल में नंगा नाच हो रहा है। भारतीय राजनीति में भारी गिरावट देखने को मिल रही है। अपराधियों के हाथ में सत्ता होने से देश की कानून व्यवस्था बिगड़ती जा रही है। देखने को मिल रहा है कि बंगाल को लेकर डर का इजहार और उड़ीसा यौन उत्पीड़न मामले पर चुप्पी , यही दोहरा चरित्र है।

कौन है माँ शैलपुत्री, क्या है इनकी कहानी और क्यों होती है इनकी प्रथम पूजा जरूर जाने-

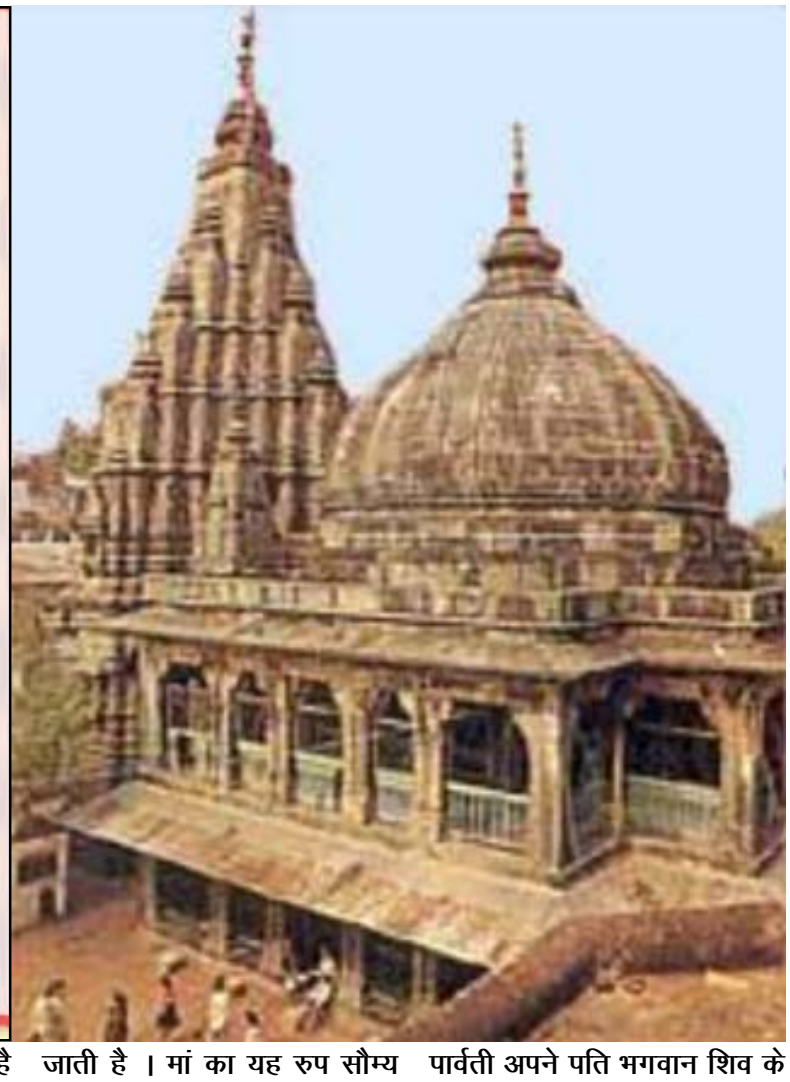

माँ दुर्गा को सर्वप्रथम शैलपुत्री के रूप में पूजा जाता है। हिमालय के यहां पुत्री के रूप में जन्म लेने के कारण उनका नामकरण हुआ शैलपुत्री। इनका वाहन वृषभ है, इसलिए यह देवी वृषारूढ़ा के नाम से भी जानी जाती हैं। इस देवी ने दाएं हाथ में त्रिशूल धारण कर रखा है और बाएं हाथ में कमल सुशोभित है। यही देवी प्रथम दुर्गा हैं। ये ही सती के नाम से भी जानी जाती हैं।

माँ शैलपुत्री की कहानी इस प्रकार से हैं –

एक बार प्रजापति दक्ष ने यज्ञ करवाने का फैसला किया। इसके लिए उन्होंने सभी देवी–देवताओं को निमंत्रण भेज दिया, लेकिन भगवान शिव को नहीं। देवी सती भलीभांति जानती थी कि उनके पास निमंत्रण आएगा, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। वो उस यज्ञ में जाने के लिए बेचौन थीं, लेकिन भगवान शिव ने मना कर दिया। उन्होंने कहा कि यज्ञ में जाने के लिए उनके पास कोई भी निमंत्रण नहीं आया है और इसलिए वहां जाना उचित नहीं है। सती नहीं मानीं और बार बार यज्ञ में जाने का आग्रह करती रहीं। सती के ना मानने की वजह से शिव को उनकी बात माननी पड़ी और अनुमति दे दी।

सती जब अपने पिता प्रजापित दक्ष के यहां पहुंची तो देखा कि कोई भी उनसे आदर और प्रेम के साथ बातचीत नहीं कर रहा है। सारे लोग मुँह फेरे हुए हैं और सिर्फ उनकी माता ने स्नेह से उन्हें गले लगाया। उनकी बाकी बहनें उनका उपहास उड़ा रहीं थीं और सति के पति भगवान शिव को भी तिरस्कृत कर रहीं थीं। स्वयं दक्ष ने भी अपमान करने का मौका ना छोड़ा। ऐसा व्यवहार देख सती दुखी हो गई। अपना और अपने पति का अपमान उनसे सहन न हुआ...और फिर अगले ही पल उन्होंने वो कदम उठाया जिसकी कल्पना स्वयं दक्ष ने भी नहीं की होगी।

सती ने उसी यज्ञ की अग्नि में खुद को स्वाहा कर अपने प्राण त्याग दिए। भगवान शिव को जैसे ही इसके बारे में पता चला तो वो दुखी हो गए। दुख और गुस्से की ज्वाला में जलते हुए शिव ने उस यज्ञ को ध्वस्त कर दिया। इसी सती ने फिर हिमालय के यहां जन्म लिया और वहां जन्म लेने की वजह से इनका नाम शैलपुत्री पड़ा।

शैलपुत्री का नाम पार्वती भी है। इनका विवाह भी भगवान शिव से हुआ

मां शैलपुत्री का वास काशी नगरी वाराणसी में माना जाता है। वहां शैलपुत्री का एक बेहद प्राचीन मंदिर है जिसके बारे में मान्यता है कि यहां मां शैलपुत्री के सिर्फ दर्शन करने से ही भक्तजनों की मुरादें पूरी हो जाती हैं। कहा तो यह भी जाता है कि नवरात्र के पहले दिन यानि प्रतिपदा को जो भी भक्त मां शैलपुत्री के दर्शन करता है उसके सारे वैवाहिक जीवन के कष्ट दूर हो जाते हैं। चूंकि मां शैलपुत्री का वाहन वृषभ है इसलिए इन्हें वृषारूढ़ा भी कहा जाता है। इनके बाएं हाथ में कमल और दाएं हाथ में त्रिशूल रहता है।

क्यों कि जाती है माँ शैलपुत्री की प्रथम पूजा –

मां दुर्गा के नौ रुपों में पहला रुप है शैलपुत्री का। नवरात्र के पहले दिन घट स्थापना के साथ देवी के इसी रुप की पूजा की जाती है । मां का यह रुप सौम्य और भक्तों को प्रसन्नता देने वाला है । ऐसी मान्यता है कि देवी पार्वती पूर्व जन्म में दक्ष प्रजापति की पुत्री सती थी । दक्ष के यज्ञ कुंड में जलकर देवी सती ने जब अपने प्राण त्याग दिए तब महादेव से पुनः मिलन के लिए उन्होंने पर्वतराज हिमालय की पुत्री के रुप में जन्म लिया । पर्वतराज हिमालय की पुत्री होने के कारण ये हेमवती और उमा नाम से जानी जाती हैं । पर्वत को शैल भी कहा जाता है इसलिए माता का प्रथम रुप शैलपुत्री के नाम से जाना जाता है । मान्यता है कि देवी पार्वती ने अपने पूर्वजन्म के पति भगवान शिव को पुनः पाने के लिए वर्षों कठोर तप किया । इनके तप से प्रसन्न होकर महादेव ने पार्वती को पत्नी रुप में स्वीकार कर लिया । विवाह के पश्चात देवी पार्वती अपने पति भगवान शिव के साथ कैलाश पर्वत पर चली गईं । इसके बाद मां पार्वती हर साल नवरात्र के नौ दिनों में पृथ्वी पर माता–पिता से मिलने अपने मायके आने लगीं । संपूर्ण पृथ्वी माता को मायका माना जाता है । नवरात्र के पहले दिन पर्वतराज अपनी पुत्री का स्वागत करके उनकी पूजा करते थे इसलिए नवरात्र के पहले दिन मां के शैलपुत्री रुप की पूजा की जाती है । भगवती का वाहन बैल है । इनके दाहिने हाथ में त्रिशूल और बाएं हाथ में कमल का फूल है । साथ ही इन्हें समस्त वन्य जीव–जंतुओं की रक्षक माना जाता है । दुर्गम स्थलों पर स्थित बस्तियों में सबसे पहले शैलपुत्री के मंदिर की स्थापना इसीलिए की जाती है कि वह स्थान सुरक्षित रह सके।

जय मातादी

मुलुंड में ज्युतिया पूजन समारोह संपन्न

युवाब्रिगेड एसोसिएशन द्वारा ज्युतिया पूजन समारोह (जिवितपुत्रिका व्रत) का आयोजन

सेठ रामकृपाल सिंह प्रांगण. भानबाई निवास,म.गांधी रोड,मुलुंड प.पर किया गया। यह पूजन समारोह विगत 50 वर्षों से उपरोक्त स्थान पर उत्तर भारतीय महिलाओं द्वारा अपने पुत्रों के दीर्घकालिक,निरोगी जीवन हेतु 24 घंटे का निराजल व्रत रख कर किया जाता है। युवाब्रिगेड एसोसिएशन के अध्यक्ष डॉ.सचिन सिंह द्वारा आयोजित ज्युतिया (जिवित पुत्रिका व्रत) पुजन समारोह में समाज सेवक डॉ. बाबुलाल सिंह,डॉ.आर.एम पाल, मोहित सिंह,राकेश मिश्रा,मैथ्यु चेरियन सहित कई गणमान्य लोग उपस्थित रहे। इस आयोजन में समाजसेविका श्रीमती जयबाला

सिंह,बासमती सिंह,हेमलता सिंह,विभा सिंह,बबीता गुप्ता,आरती सिंह,साधना सिंह,अमिता मिश्रा,रचना पांडे, अनिता सिंह,नीतु सिंह,उर्वशी सिंह,नीलम सिंह,सुषमा सिंह,खुशबु गुप्ता का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ। पूजन समारोह सायं 4 बजे से रात्रि 8बजे तक चलता रहा। सैकड़ो महिलाओ ने इस पूजन समारोह में सपरिवार शामिल होकर पूजन किया।

परम पूज्य संत श्री आशारामजी बापूके साधक समिति द्वारा रविवार दिनांक 29 सितंबर को मुक्तिगंज बाजार जौनपुर केराकत रोड उत्तर प्रदेश मे प्रभात फेरी निकाली गई

डा नीलिमा पाण्डेय द्वारा रचित 'स्त्री और प्रेम' काव्य संग्रह के विमोचन में पहुचे देश-विदेश के लोग

मुंबई। मुंबई के अंधेरी स्थित कंट्री क्लब में काव्य सृजन परिवार द्वारा भव्यतम आयोजन किया गया जिसमें प्रसिद्ध विदुषी कवयित्री डॉ नीलिमा पाण्डेय द्वारा लिखी लघु काय कविता/क्षणिकाओं के संग्रह, श्स्त्री और प्रेम श जो कि श्प्रवासी प्रेम पब्लिशिंग इंडियाश से प्रकाशित किया गया है उसका विमोचन किया गया, विमोचन के समय देश विदेश से आए लोगों ने डॉ नीलिमा पाण्डेय को शुभकामनाएं दीं तथा अनेकों उपहार दिए। खचाखच भरे हाल में सैकड़ों लोगों की उपस्थिति रही विमोचन के समय साहित्यकारों ने खड़े होकर तालियों की गड़गड़ाहट में डॉ नीलिमा पाण्डेय जी को बधाईयां दी।

अवगत हो कि सभागार में मौजूद अतिविशिष्ट लोगों में काव्य सृजन परिवार के अध्यक्ष श्री धर मिश्र जी,मध्यप्रदेश मुरैना से पधारे आचार्य अशोक कौशिक जी, अमेरिका से किरीट नारीया,जर्मनी से आए नीतिन याज्ञिकजी, गुजरात से पधारे मुकेश जोशी जी तथा मुख्य अतिथि बाबूभाई भवानजी के साथ भारत–भूषण योगिराज जी और अंतरराष्ट्रीय शायर प्रबुद्ध व्यक्ति सागर त्रिपाठीजी की अध्यक्षता में कार्यक्रम संपन्न हुआ जिसमें पत्रिका अग्निशीला के संपादक ,आर.टी.आई.एक्टीविस्ट अनिल गलगली,प्रसिद्ध लेखक, कार्टूनिस्ट आबिद सुरती,आशीष काशीनाथ पाण्डेय, रवि योगनाथ पाण्डेय और सुनिल तिवारी मुख्य अतिथि थे।परम विद्वान, विचारक कृपा शंकर मिश्रा जी के साथ ही पूर्व आयुक्त कमलाशंकर मिश्रा, मूर्धन्य भारतांचली, नरेंद्र शर्मा ख़ामोश, प्रमोद पल्लवित, आनंद पाण्डेय, प्रमोद कुश श्तनहाश अंजनी द्विवेदी, राजीव मिश्रा,रीता,दीपक खेर, हीरालाल यादव कुशवाहा,कवि निर्झर,कमर हाजी पूरी, अभिलाष अवस्थी सहित कई लोग रहे,असीमा भट्ट, दमयंती जी, सत्यवती मौर्य, मंजूला जगतराम, सुषमा शुक्ला, अर्चना वर्मा सिंह,किरण तिवारी ,लक्ष्मी यादव, विनीता सहल, शाहीन शेख,शील निगम, शशिकला पटेल, विद्या शर्मा, विकलांग सेवा संस्था की ओर से त्रिगुणायत द्विवेदी के साथ संस्था के कई लोग,मानव सेवा ट्रस्ट के अध्यक्ष प्रमोद पाण्डेय जी सहित कई लोग, पत्रकार यशपाल शर्मा सहित कई पत्रकार,राजू कबिरा, शिवदत्त अक्स स्पार्किंग एनजीओ से पवन केसरी, शीतला प्रसाद दूबे, शिवनारायण यादव, गुरू प्रसाद गुप्ता इत्यादि सैकड़ों लोगों ने उपस्थित रह कर कार्यक्रम को ऊंचाई प्रदान किया। कार्यक्रम में विशेष भूमिका में रहे लक्ष्मीकांत कमलनयन, राहुल सिंह ओज,नीतू पाण्डेय श्क्रांतिश और कुसुम तिवारी,कृतायन पाण्डेय, वैष्णवी तिवारी,अनुज कनौजिया का अथक परिश्रम मेहमानों की प्रसन्नता का कारण रहा।

हृदय स्वास्थ्य को बनाने के लिये अत्याधुनिक तकनिक का विकल्प उपलब्ध

मुंबई। विश्व हृदय दिवस के अवसर पर, फोर्टिस हास्पीटल मुलुंड के वरिष्ठ इंटरवेंशनल कार्डियोलॉजिस्ट डॉ. अतुल लिमये ने कहा कि हृदय स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए अत्याधुनिक तकनीक का उपयोग सबसे अच्छा विकल्प है। उन्होंने कहा कि कोरोनरी धमनी रोग एक ऐसी स्थिति है जिसमें कोलेस्ट्रॉल युक्त प्लाक हृदय को रक्त की आपूर्ति करने वाली धमनियों में रुकावट पैदा करता है। एलडीएल कोलेस्ट्रॉल का उच्च स्तर,मधुमेह,उच्चरक्तचाप, धूम्रपान और गतिहीन जीवन शैली सभी हृदय रोग में योगदान करते हैं। ऐसे कई पारंपरिक जोखिम कारक हैं जो हृदय रोग में योगदान करते हैं। उदाहरण के लिए, हृदयाघात के सभी पीड़ितों में से केवल 50 प्रतिशत में ही उच्च कोलेस्ट्रॉल होता है। ऐसे कई कारक हैं जो हृदय रोग का कारण बन सकते हैं। इसी तरह, कैल्शियम की सही मात्रा का पता लगाने और उसका सटीक आंकड़ा जानने के लिए सीटी स्कैन किया जा सकता है। कैल्शियम की मात्रा जितनी अधिक होगी, हृदय तक जाने वाली कोरोनरी धमनियों पर कैल्सीफाइड प्लाक का बोझ उतना अधिक होगा, और इसलिए जोखिम भी अधिक होगा।

हृदय विकार का मुख्य कारण

बदलती जीवनशैली है। डॉ. अतुल लिमये ने यह भी कहा कि एक साधारण रक्त परीक्षण या स्कैन लोगों को अपनी जीवनशैली बदलने के लिए प्रेरित कर सकता है। खासतौर पर हृदय रोग से बचने के लिए एहतियाती उपाय करना जरूरी है। इनमें स्वस्थ आहार खाना, नियमित व्यायाम करना, रक्तचाप, शर्करा और कोलेस्ट्रॉल को नियंत्रण में रखना, वजन को नियंत्रण में रखना और तंबाकू के सेवन से बचना शामिल है। इसके अलावा जरूरी मेडिकल टेस्ट, टेस्ट और स्कैन कराना भी उतना ही जरूरी है।

कांग्रेस के EPFO ने सुरक्षित किया कर्मचारियों का भविष्य, अब पुरानी पेंशन भी दिलवाएगी कांग्रेस

ये बात आजादी के सिर्फ चार–पांच साल बाद की है। देश में कर्ज और भुखमरी की समस्या व्याप्त थी। अंग्रेजों द्वारा खोखला कर छोड़ा गया भारत फिर से अपने पैरों पर खड़ा होने की कोशिश कर रहा था। मगर जनता के भविष्य पर अभी भी काले बादल मंडरा रहे थे।

प्रधानमंत्री नेहरू जी आने वाले कल की गति जानते थे। इसलिए उन्हें पता था कि देश का आर्थिक भविष्य तब तक ठीक नहीं होगा, जब तक देश की जनता का आर्थिक भविष्य अंधेरे मे रहेगा।

अपने लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए नेहरू ने प्लान बनाया कि सबसे पहले देश के उन सभी कर्मचारियों का भविष्य सुरक्षित बनाना होगा। जो सरकारी अथवा प्राइवेट संस्थानों, कंपनियों में नौकरी करते हैं। इसी को देखते हुए साल 1952 में नेहरू जी ने कर्मचारी भविष्य निधि संगठन (EPFO) की स्थापना की।

EPFO के नियमानुसार कुछ पैसा कर्मचारियों की सैलरी से कटकर तो कुछ पैसा संबंधित कंपनी की तरफ से अंशदान के रूप में कर्मचारियों के खाते में भविष्य के लिए जमा होने लगा। कुछ सालों बाद जब कर्मचारी कंपनी छोड़ते या रिटायर होते, तब तक उनके खाते में एक अच्छी–खासी रकम इकट्ठा हो जाती।

इस तरह EPFO की स्थापना का प्रभाव बहुत दूरगामी साबित हुआ। जो कर्मचारी पहले अपने भविष्य को लेकर डरते थे, कुछ ही वर्षों बाद वही कर्मचारी बचत और निवेश की तरफ आकर्षित हुए। नतीजा ये रहा कि इन कर्मचारियों के साथ देश की आर्थिक हालत पर भी बेहद सकारात्मक प्रभाव पड़ा।

आज अपनी स्थापना के 72 साल बाद भी नेहरू का EPFO देश का सबसे बड़ा सामाजिक सुरक्षा संगठन होने के नाते, यह मुख्य रूप से लोगों को सेवानिवृत्ति के लिए बचत करने के लिए प्रोत्साहित करता है।

कांग्रेस पार्टी और नेहरू की सोच हमेशा देश और देशवासियों के हित में रही है। कांग्रेस के लिए देशवासियों का भविष्य बहुत मायने रखता है।

यही एकमात्र कारण है कि आज भी जब भाजपा सरकार और मोदी सरकारी कर्मचारियों के सामाजिक सुरक्षा का हिस्सा पेंशन डकारना चाहते हैं, ऐसी स्थिति में कांग्रेस कर्मचारियों के साथ खड़ी है। कर्मचारियों को इंसाफ दिलाने के लिए राहुल गांधी लगातार लड़ाई लड़ रहे हैं।

ज्ञान सरोवर
(हिन्दी साप्ताहिक)

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक पूजा प्रसाद पाण्डेय द्वारा नवभारत प्रेस लि. नवभारत भवन, प्लाट नं.13, सेक्टर–8, सानपाड़ा (पूर्व) नवी मुम्बई 400706 (एम.एस.) से मुद्रित तथा 11 गोकुलेश सोसायटी, पंडित मदन मोहन मालवीय रोड, मुलुण्ड (प.) मुम्बई 400080 (एम.एस.) से प्रकाशित।

सम्पादक

पूजा प्रसाद पाण्डेय

मो0– 9833567799

R.N.I.No.MAHHIN/2009/27377

Email: editor@gyansarovar.org
www.gyansarovar.org

समाचार पत्र में प्रकाशित समाचारों/लेखों में लेखकों तथा संवाददाताओं के अपने विचार हैं। किसी भी लेख/समाचार की जिम्मेदारी प्रकाशक/सम्पादक की नहीं होगी। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र मुम्बई न्यायालय होगा।